OM 5 -final_Page 1 and 2 6/10/2014 5:04 AM Page 12

"मैं" और शख्सियत -ब्र.कु.प्रीति

ईमानदारी का मतलब नकली और झूठा बनने से बचना और सच्चा एवं असली बनना है। अगर घर, दफ्तर और समाज में रिश्तों को बनाने वाली कोई चीज़ है तो वह है - सच्चाई। अपना वचन न निभाना बेईमानी है। ईमानदारी से खुलापन, विश्वसनीयता और साफ बोलने की प्रेरणा आती है। वह अपने और दूसरों के प्रति सम्मान दर्शाती है। ईमानदारी का मतलब ईमानदार होना है न कि ईमानदारी दिखाना। झूठ की रफ्तार भले ही तेज़ हो, मगर सच टिकाऊ होता है। ईमानदारी कंपनी के टाइटल या ब्रोशर में नहीं बल्कि लोगों के चरित्र में पाई जाती है।

एक सेर मक्खन

एक किसान एक बेकर को रोज़ एक सेर मक्खन बेचा करता था। एक दिन बेकर ने यह परखने के लिए कि मक्खन एक सेर है या नहीं, उसे तौला और पाया कि मक्खन कम था। इस बात से वह गुस्सा हो गया और किसान को अदालत में ले गया। जज ने किसान से पूछा कि उसने तौलने के लिए किस बाट का इस्तेमाल किया था? किसान ने जवाब दिया, "हुज़ूर, मैं तो अज्ञानी हूँ। मेरे पास तौलने के लिए कोई सही बाट नहीं है, लेकिन मेरे पास एक तराज़ू है।" जज ने उससे पूछा कि फिर वह कैसे मक्खन तौलता है? किसान ने जवाब दिया, "इसने मक्खन तो मुझसे अब खरीदना शुरू किया, मैं तो बहुत पहले से इससे एक सेर ब्रेड खरीद रहा हूँ। रोज़ सुबह जब ब्रेड लेकर आता है तो मैं बाट बनाकर बराबर का मक्खन तौल कर देता हूँ। अगर इसमें किसी का दोष है तो वह है बेकर का।" ज़िंदगी में हमें वही वापस मिलता है जो हम दूसरों को देते हैं। हम जब भी कोई काम करें तो खुद से यह सवाल पूछें - क्या मुझे जो पैसा मिलता है, मैं उसके बराबर की मेहनत भी कर रहा हूँ। ईमानदारी और बेईमानी एक आदत बन जाती है। कुछ लोग बेईमानी की प्रैक्टिस करते हैं और चेहरे पर ज़रा भी शिकन लाए बिना बड़ी आसानी से झूठ बोल सकते हैं। ऐसे लोग भी हैं, जो इतना झूठ बोलते हैं कि सच क्या है यह भी भूल जाते हैं। मगर वे किसे धोखा दे रहे हैं? किसी और को नहीं बल्कि खुद को।

दिखावे से दूर रहें

मुसीबत में पड़े किसी दोस्त से यह पूछना काफी अखरता है कि, "मेरे लायक कोई काम हो तो बताओ।" ऐसा मदद करने के मकसद से नहीं बल्कि दिखावे के लिए कहा जाता है। अगर हम सचमुच मदद करना चाहते हैं तो करने लायक कोई उचित काम सोचिये और कीजिये। बहुत से लोग अपने स्वार्थ को छिपाने के लिए इंसानियत का नकाब लगा लेते हैं, ताकि जब भी उन्हें तकलीफ हो, तो वे बदले में हक जताते हुए सहायता माँग सकें।

ईमानदारी बनाए रखें

प्राचीन ज्ञान कहता है, "ऐसी कोई चीज़ जो बेची और खरीदी जाए वह तब तक मूल्यवान नहीं होती, जब तक उसमें एक न बिक सकने वाला अनमोल राज़ छिपा नहीं होता।" वह अनमोल खूबी जो हर उत्पाद में होती है वह है उसके बनाने वाले की विश्वसनीयता, ईमानदारी और उसकी प्रतिष्ठा।

विनम्र बनें

विनम्रता के बिना आत्मविश्वास अहंकार बन जाता है। विनम्रता सारी खूबियों की बुनियाद है। यह आदमी की महानता को दर्शाती है। विनम्रता का अर्थ अपनी प्रतिष्ठा घटाकर कद छोटा करना नहीं है। सच्ची विनम्रता लोगों को आकर्षित करती है, लेकिन बनावटी विनम्रता दूसरों को हमसे परे धकेलती है। बहुत साल पहले एक घुड़सवार ने कुछ सैनिकों को देखा जो एक लकड़ी का गट्ठा उठाने की असफल कोशिश कर रहे थे। उस समय उनका नायक भी वहीं खड़ा था। घुड़सवार ने नायक से पूछा कि वह उनकी मदद क्यों नहीं करता। नायक ने जवाब दिया, "मैं इनका नायक हूँ और मेरा काम इनको आदेश देना है।" घुड़सवार अपने घोड़े से उतरकर उन सैनिकों के पास गया और उसने उस गट्ठे को उठाने में मदद की। घुड़सवार चुपचाप अपने घोड़े पर सवार हो गया और उस नायक से बोला, "अगली बार जब तुम्हारे आदमियों को सहायता की ज़रूरत पड़े तो अपने कमांडर-इन-चीफ को बुलवा लेना।" जब वह घुड़सवार चला गया तो नायक और सिपाहियों को पता चला कि वह घुड़सवार और कोई नहीं बल्कि जॉर्ज वॉशिंगटन थे। संदेश बिल्कुल साफ है। सफलता और विनम्रता हाथ में हाथ डाले चलती है। जब दूसरे हमारी प्रशंसा करते हैं तो आवाज़ बहुत दूर तक जाती है। सादगी और विनम्रता महानता की दो निशानियां हैं।

विनम्रता के बिना आत्मविश्वास अहंकार बन जाता है। विनम्रता सारी खूबियों की बुनियाद है। यह आदमी की महानता को दर्शाती है। विनम्रता का अर्थ अपनी प्रतिष्ठा घटाकर कद छोटा करना नहीं है। विनम्रता लोगों को आकर्षित करती है।

दूसरों को समझने और ख्याल रखने वाला बनें

रिश्ते निभाने में हम सभी से गलतियां होती हैं, कभी-कभी हम दूसरों की ज़रूरतों के प्रति असंवेदनशील हो जाते हैं, खासकर उनके प्रति जो हमारे बहुत करीबी हैं। फिर इससे मायूसी और नाराज़गी पैदा होती है। मायूसी से बचने के लिए अपनी समझदारी ज़रूरी है। आपसी रिश्ते लोगों में पूर्णता होने की वजह से नहीं बनते बल्कि आपसी समझदारी से बनते हैं। एक अच्छा इंसान बनने से ज़्यादा संतोष दूसरों का ख्याल रखने में मिलता है। इससे हमारी ख्याति अपने आप ही बढ़ जाती है जो हमारे जीवन का सबसे बेहतर बीमा है, और जिसके लिए कुछ खास खर्च नहीं करना पड़ता है। कुछ लोग समझदारी दिखाने और ख्याल रखने की कमी को पैसों से पूरा करने की कोशिश करते हैं। दूसरों को समझना उन पर पैसे खर्च करने से ज़्यादा महत्वपूर्ण है और अगर हम चाहते हैं कि दूसरे समझें तो इसका सबसे अच्छा तरीका यही है कि हम दूसरों को समझें। किसी के साथ संवाद कायम करने के लिए उसे समझना ज़रूरी है।

उदार बनें

उदारता भावनात्मक परिपक्वता की पहचान है। उदार होने का मतलब है कि हम बिना किसी के कहे औरों का ख्याल रखें और उनके लिए सोचे-विचारें। उदार लोगों को ज़िंदगी जैसी नियामतें देती है, स्वार्थी लोग उसकी उम्मीद सपने में भी नहीं कर सकते।

व्यवहारकुशल बनें व दयालुता

किसी भी रिश्ते में व्यवहारकुशलता का भी काफी महत्व है। व्यवहारकुशल होने का मतलब है - किसी व्यक्ति को नाराज़ किए बगैर अपनी बात कह देने की काबिलीयत। पैसे से बहुत महँगा कुत्ता तो खरीदा जा सकता है, मगर वह पूँछ हमारे प्यार और दयालुता की वजह से ही हिलाएगा। दया का भाव जल्दी से जल्दी दिखाना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने में कब देर हो जाए कुछ कहा नहीं जा सकता। दयालुता एक ऐसी भाषा है जिसे बहरे सुन सकते हैं और अंधे देख सकते हैं। एक दोस्त के जीवित रहते उसके प्रति दयालुता दिखाना बेहतर है, बजाय इसके कि उसके मरने पर उसकी कब्र पर फूल चढ़ाया जाए। दयालुता की भावना इंसान में अच्छी अनुभूति पैदा करती है, चाहे व्यक्ति इस भावना को किसी और के लिए दिखाए या दूसरे लोग उसके प्रति दिखाएं। मीठी बोली बोलने से जीभ को कोई तकलीफ नहीं होती।

पटना। यूथ एम्पावरमेन्ट एण्ड पॉज़ीटिव थिंकिंग विषय पर एन. एन. एस. के स्टूडेन्ट्स को समझाते हुए ब्र.कु. मृदुल।

पेटलाद-गुज.। कार्यक्रम में शिव ध्वज फहराने के बाद ईश्वरीय स्मृति में एम.एल.ए. निरंजन भाई पटेल, ब्र.कु. भगवती तथा अन्य।

पोखरीपुर-भुवनेश्वर(ओडिशा)। शिवजयन्ती के अवसर पर ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी,प्रधान आचार्य हरिहर क्षेत्र, ब्र.कु. गीता, श्रीमती रेखा गुप्ता तथा अन्य भाई बहनें।

धुँगरा बादशाहपुर-उ.प्र.। दिव्य प्रकाश भवन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. उषा माउण्ट आबू, ब्र.कु.मनोरमा, कल्चर मिनिस्टर सुभाष पांडे, सभासद अस्विनी कुमार तथा अन्य।

आदमपुर-मण्डी। 'राजयोग शिविर एवं तनावमुक्त जीवन' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन द्वारा शुभारंभ करते हुए तरसेम गोयल,गौशाला प्रधान, घीसाराम भाई,जैन सभा प्रधान, ब्र.कु. सावित्री, ब्र.कु. कविता तथा अन्य।

पालिया-कलां(उ.प्र.)। तहसीलदार हर्ष वर्धन को ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. सीता। साथ हैं शारदा भाई,वकील, विश्वकर्मा भाई,टीचर।

उमरेड-महा.। आध्यात्मिक स्नेह मिलन कार्यक्रम में उपस्थित हैं फादर संतोष, ब्र.कु.रेखा, ब्र.कु.रामनाथ,माउण्ट आबू, माता भंतेजी तथा ब्र.कु.नाना।